

पाठ का नाम –नादान दोस्त (कहानी)  
कक्षा – छठी  
पाठ के लेखक –मुंशी प्रेमचंद



# लेखक का जीवन परिचय

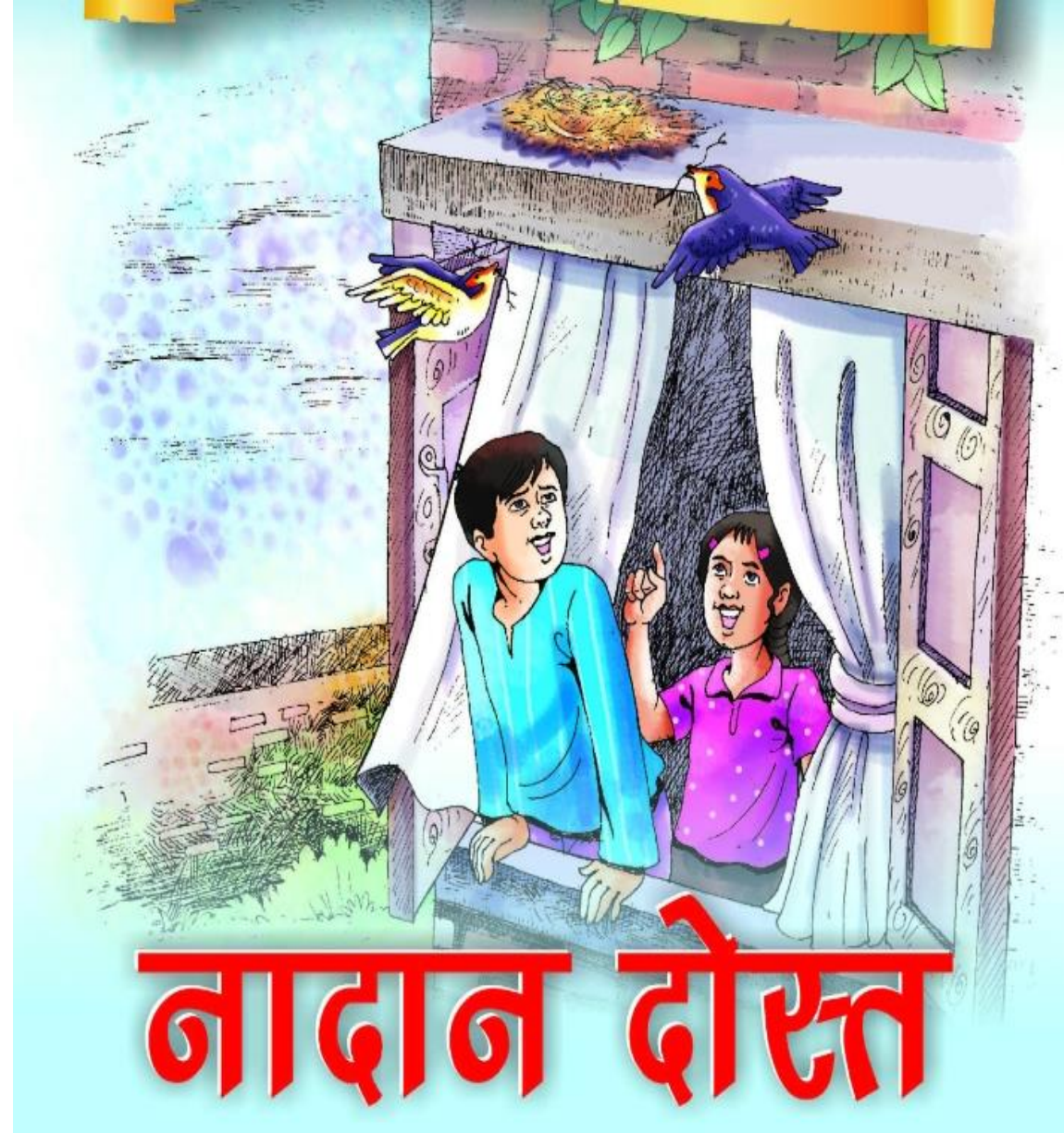
- मुंशी प्रेमचंद का जन्म एक गरीब घराने में बनारस के पास लमही गाँव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ था।
- उनका असली नाम धनपतराय था
- उनकी माता का नाम आनंदी देवी और पिता का नाम मुंशी अजायबलाल था।
- उनके पिता डाकखाने में मुंशी थे इसलिए उनके नाम के साथ भी मुंशी लगाते हैं।
- उनका पारिवारिक जीवन कष्टदायी रहा, उन्होंने ट्यूशन पढ़ा-पढ़ा कर अपनी रोज़ी-रोटी चलाई और मैट्रिक भी पास किया।
- उन्होंने एफ • ए और बी • ए भी पास किया और स्कूल में मास्टरी भी शुरू की।

## प्रमुख रचनाएँ :-

- उपन्यास :-निर्मला, गोदान, रंगभूमि, गबन आदि ।
  - कहानियाँ :-नमक का दारोगा, प्रेम प्रतिमा, सप्त सुमन ,नव जीवन आदि ।
  - इनकी मृत्यु 8 अक्टूबर ,1936को वाराणसी,उत्तर प्रदेश में हुई ।
- 

कठिन शब्दार्थ

- 1.अधीर – बेचैन
- 2.अनुमान –अंदाज़ा
- 3.कै –कितने
- 4.चिथड़े –फटे –पुराने कपड़े
- 5.जिज्ञासा- जानने की इच्छा
- 6.पेचीदा –कठिन
7. यकायक –अचानक
- 8.सहमी हुई –डरी हुई
- 9.सिटकनी –कुण्डी
- 10.सुध –खबर
- 11.आँख बचाना –छिपाना
- 12.उधेड़बुन –दुविधा
13. हिफाज़त –सुरक्षा
14. लू –गर्म हवा
15. ताकना – देखना
- 16.चेहरे का रंग उड़ जाना – डर जाना
17. भीगी बिल्ली बनना –भयभीत होना



# नादान दोस्त

# कहानी का सार

नादान दोस्त एक बाल कहानी है जिसमें प्रेमचंद जी ने केशव और श्यामा नामक दो भाई बहनों की नादानी का वर्णन किया है। केशव के घर कार्निस पर एक चिड़िया ने अंडे दिए थे। केशव और उसकी बहन बार-बार कार्निस के ऊपर चिड़िया को आते जाते देखते। चिड़िया को देखने में वह इतने मग्न हो जाते कि अपना दूध और जलेबी का नाश्ता भी भूल जाते। उनके मन में तरह-तरह के सवाल उठते जैसे अंडों का आकार कैसा होगा, उनका रंग कैसा होगा, अंडे कितने होंगे, उनमें से बच्चे कब निकलेंगे, उनके पर कैसे होंगे आदि। उनके सवालों के जवाब देने का किसी के पास वक़्त न था क्योंकि उनके पिताजी दफ़्तर के कामों में व्यस्त रहते और अम्मा को घर के कामों से फ़र्सत न थी। दोनों भाई बहन अपने सवालों के स्वयं ही जवाब देकर अपने आप को तसल्ली दे दिया करते।

दो-तीन दिनों के बाद दोनों बच्चों के मन में अंडों को देखने की लालसा उत्पन्न हुई। उन्होंने अनुमान लगा लिया था कि अब अंडों से बच्चे निकल आए होंगे। केशव और श्यामा को चिड़िया के बच्चों की चिंता सताने लगी। चिड़िया के बच्चे क्या खाएँगे, कैसे इतनी धूप में रहेंगे, जब प्यास लगेगी तब क्या करेंगे? ये सोचते हुए केशव और श्यामा ने चिड़िया के बच्चों की मदद करने की सोची। उन्होंने मिलकर चिड़िया के बच्चों के लिए पानी और चावल के दाने कार्निंस पर रखने की योजना बनाई। जब चिड़िया के बच्चों के लिए पानी और चावल के दानों का प्रबंध हो गया तो केशव ने कार्निंस पर उसे रख दिया। जब केशव ने कार्निंस पर देखा तो उसे चिड़िया के अंडे दिखाई दिए और वह अंडे तिनकों पर पड़े थे।

तब केशव और श्यामा ने उनके लिए छाया का भी इंतजाम किया और अंडों के लिए तिनकों के ऊपर कपड़े की एक गद्दी भी बना दी ताकि अंडे आराम से रह सकें।



सारा प्रबंध करने के बाद केशव और श्यामा सोने के लिए चले गए।

जब शाम को वे दोनों सो कर उठे तो उन्होंने देखा चिड़िया के अंडे नीचे गिरे हुए थे।

केशव को यह सब देखकर बहुत दुख हुआ। इतने में माँ वहाँ आ जाती है और चिड़िया के टूटे हुए अंडों को देखकर माँ उनसे पूछती है कि क्या उन्होंने अंडों को हाथ लगाया था? तब श्यामा शिकायत भरे लहजे में माँ को बताती है कि केशव ने अंडों को हाथ लगाया था। सब जानने के बाद माँ उन दोनों को बताती है कि चिड़िया के अंडों को हाथ लगाने से अंडे गंदे हो गए और इसलिए चिड़िया ने उन्हें तोड़ दिया। गंदे अंडों को चिड़िया नहीं सेती।



तब केशव माँ को बताता है कि वह तो अंडों की हिफाज़त करना चाहता था। माँ यह सुनकर हँसने लगती है। केशव को कई दिनों तक इस बात का दुख रहा और दुबारा वहाँ चिड़िया नज़र न आई।